द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय
'देवीना' उपन्यास की पृष्ठभूमि और कथावस्तु

2.1 उपन्यास के तत्त्व

'उपन्यास' हिंदी साहित्य की आधुनिक युग की एक महत्तवपूर्ण देन है। 'उपन्यास' को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है। अतः साहित्य की कौन-सी विधा हो उसके अपने तत्त्व होते हैं। अतः उपन्यास विधा के तत्त्वों को हम संक्षिप्ततः निम्न रूप से देख सकते हैं। स्वर्गीय प्रेमचंदजी ने कहा है कि मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र समझता हूँ। उनके इस छोटे से वाक्य में ही उपन्यास कला का सारा रहस्य निहित है।"[1] अतः साहित्यिक विद्वानों ने उपन्यास के छः तत्त्व माने है।

1. कथावस्तु

कथावस्तु यह उपन्यास का पहला तत्त्व है। प्रत्येक उपन्यास में एक कहानी होती है। उपन्यास की कथा में सुख-दुख या अन्य किसी प्रकार के संघर्ष की चर्चा की जाती है, उसे ही उपन्यास की कथावस्तु कहते हैं। अर्थात उपन्यास की मूल कहानी को कथावस्तु कहा जाता है। इसमें मुख्य या अधिकारिक कथा के साथ-साथ प्रासंगिक कथाओं का अंतर्कथाओं का समावेश रहता है। उपन्यासकार अपनी रूचि और उद्देश्य के अनुसार इतिहास, पुराण, जीवनी, विषमता, शोषण, रुढ़ियाँ, परंपराएँ आदि विषयों से संबंधित कथानक को चुनता है। कथावस्तु के आरंभ, मध्य और अंत आदि तीन भाग होते हैं।

2. पात्र और चरित्र-चित्रण

पात्र चरित्र-चित्रण यह उपन्यास का दूसरा महत्तवपूर्ण तत्त्व है। उपन्यास की कथावस्तु में सुख-दुख को भोगनेवाले या संघर्ष में भाग लेनेवाले कुछ व्यक्ति होते हैं, उन व्यक्तियों का चित्रण उपन्यासकार करता है। उन्हीं व्यक्तियों को उपन्यास के पात्र कहा जाता है। पात्रों के क्रिया-कलाप और वार्तालाप से कथावस्तु का निर्माण होता है तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। पात्र जितने ही वास्तविक और जीवंत होंगे, उतना ही कथावस्तु में आकर्षण उत्पन्न होता है। इसलिए घटनाप्रधान उपन्यासों की अपेक्षा चरित्र प्रधान उपन्यास अधिक महत्तवपूर्ण होते हैं। उपन्यास में मुख्यतः दो प्रकार के पात्र स्थिर पात्र और विकसनशील पात्र

रहते हैं। तथा इन पात्रों का चरित्र-चित्रण मुख्यतः दो प्रकार से वर्णनात्मक शैली और नाट्यात्मक शैली से किया जाता है।

3. देश-काल-वातावरण

देश-काल-वातावरण कथावस्तु का सम्यक तत्त्व है। पात्रों का आपस में कहना-सुनना जिस समय और जिस स्थान पर होता है, उसे ही देश-काल-वातावरण कहा जाता है। उपन्यास में पात्रों के चित्रण में और कथोपकथन में स्वाभाविकता और विश्वसनीयता प्राप्त होने के लिए देश-काल-वातावरण का ध्यान रखना परम आवश्यक होता है। ऐतिहासिक तथा पौराणिक उपन्यासों में तो इस तत्त्व का होना परम आवश्यक होता है। उपन्यास रचना में विशिष्ट प्रदेश, विशिष्ट काल और विशिष्ट वातावरण को ध्यान में रखकर कथानक और पात्रों का चित्रण करने से उनके संबंध में पाठकों के मन में विश्वास उत्पन्न हो जाता है। अतः देश-काल-वातावरण के वास्तविक चित्रण से उपन्यास संभवनीय, विलोभनीय तथा विश्वसनीय बन जाता है।

4. कथोपकथन

कथोपकथन को संवाद भी कहा जाता है। उपन्यास के पात्र आपस में बातचीत करते हैं। वे अपने सुख तथा दुख की कथा दूसरों से कहते हैं और दूसरों की कथा सुनते हैं। इस कहने-सुनने को ही उपन्यास का कथोपकथन, वार्तालाप या संवाद कहते हैं। चरित्र-चित्रण की नाट्यात्मक शैली का संबंध कथोपकथन से ही है। उपन्यासकार प्रसंग के अनुसार कथानक के विकास और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करने के लिए कथोपकथन का बहुत कुशलता के साथ उपयोग करता है। कथोपकथन से उपन्यास के कथानक का विकास होता है। अतः कथोपकथन से उपन्यास में स्वाभाविकता, सजीवता और विश्वसनीयता निर्माण होती है।

5. भाषा शैली

भाषा शैली में मूलतः दो तत्त्वों का समावेश हो जाता है, वह है भाषा शैली और रूप शैली। उपन्यास कथा साहित्य का मूख्य अंग माना जाता है अतः उपन्यास की भाषा बहुत गंभीर नहीं होनी चाहिए तो उपन्यास के लिए मुहावरेदार और चलती-सी भाषा प्रभाव की दृष्टि से अधिक उपयुक्त सिद्ध होती है। सामान्यतः उपन्यास में स्थिरभाषा, गतिशील भाषा, अलंकृत भाषा और काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ-साथ रूपशैली की दृष्टि से उपन्यास में वर्णनात्मक

शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली तथा मिश्र शैली का उपयोग किया जाता है।

6. उद्देश्य या बीज

उद्देश्य या बीज यह उपन्यास का अंतिम तत्त्व है। उपन्यास के उद्देश्य को बीज या जीवन दर्शन भी कहा जाता है। उपन्यास के उद्देश्य को जीवन की व्याख्या या आलोचना भी कहते हैं। उपन्यास के इतने अधिक प्रचार का कारण यह है कि वह सर्वथा मानव-जीवन से संबद्ध है और अभिव्यंजना का बिलकुल निजी तथा संवेदनापूर्ण साधन है।"[2]

2.2 'देवीना' उपन्यास की पृष्ठभूमि

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का 'देवीना' उपन्यास भले ही आधुनिककालीन हो लेकिन उसके सृजन की पृष्ठभूमि पुराण-कथा, दुष्यंत-शकुंतला की प्रणयकथा है। इस बात को लाल ने 'देवीना' उपन्यास की भूमिका में काफी सरलता से स्पष्ट किया है। किसी भी रचना के प्रभाव या प्रेरणा संबंधी डॉ. रामकुमार गुप्त कहते हैं, "कालिदास की कविता का आधार भी मल्लिका है। मल्लिका ही वह प्रेरणा है जिसने कालिदास की कलम से 'ऋतुसंहार', 'मेघदूत', 'रघूवंश' जैसे महाकाव्यों की रचना करवा ली। कवि ने 'शकुंतला' की कल्पना करते समय भी अपने सामने मल्लिका का ही रूप देखा है। मल्लिका वस्तुतः कवि की धड़कन बनकर अवतरित हुई और कालिदास के विविध नारी पात्र में समा गई। उससे हटकर जब भी कवि ने लिखना चाहा उसकी कलम रूक गई और कविता निष्प्राण बन कर रह गई।"[3] 'देवीना' उपन्यास की रचना संबंधी लाल कहते हैं, "मेरी आज की शकुंतला कहाँ है, क्या है? जिस दिन मुझे इसकी प्रतीति हुई, उसी दिन से मेरे ह्रदय में संकल्प जगा – शकुंतला की कथा आज अपने समाज के भीतर से अपने सामाजिक संदर्भ से कहूँगा।"[4] दुष्यंत शकुंतला की प्रणय कथा पर उपन्यास लिखने की प्रेरणा लाल में कुमारावस्था से ही निर्माण हुई थी। लाल जब दसवी कक्षा में थे तो संयोगवश उनकी पढ़ाई में प्रेमचंद जी का एक उपन्यास विधा पर लिखा निबंध पढ़ने में आया। उस निबंध में प्रेमचंद जी ने कहा था कि दुष्यंत-शकुंतला की पुराण कथा का आधार लेकर आज तक एक सामाजिक उपन्यास लिखा जा सकता है। बस तभी से वह बात लाल जी के दिलो-दिमाग में बेठ गई थी। फिर आगे लाल रचनाकार के रूप में उभरे तब उन्होंने अपनी छात्र जगत की उस कामना को पूरा किया मतलब देवीना उपन्यास का अंकन किया। काल की अतीत प्रेरणा के बारे में डॉ. रघुवंश कहते हैं कि "हमारे यहाँ का आदमी जोड़कर देखने का आदी है। किसी का परिचय पाने के लिए उसके बाप-दादा के नाम और गाँव के नाम का पता पूछता है।

उसे उसकी जड़ों से जोड़कर पहचानता है। वह अतीत के माध्यम से वर्तमान को समझता है। इसलिए जो जितना पीछे जाएगा उतना ही वर्तमान को जानेगा। अतीत से जुड़कर हमारा वर्तमान अधिक अर्थवान हो उठता है। क्योंकि वर्तमान एकायामी नहीं है।"[5] प्रेम संबंधी लाल के विचार, उनकी रचना 'वसंत की प्रतीक्षा' में दिखाई देती है। "प्यार कभी नहीं मरता। इस संसार में इस पूरी सृष्टि में जो कुछ भी पैदा होता है, वह कभी नहीं मरता... नहीं मरता। बस ज्यादा से ज्यादा वह रुपांतरित हो जाता है।"[6] अतः काल के 'देवीना' उपन्यास के सृजन के मूल में पुराणकालीन प्रणय-कथादुष्यंत-शकुंतला' ही है।

2.3 कथावस्तु की आवश्यकता

उपन्यास में कथावस्तु का अनन्य साधारण महत्तव है। उपन्यास साहित्यिक अभिव्यंजना का सबसे स्वतंत्र साधन है। जीवन की यथार्थता से ही वह प्रेरणा पाता है और उसी के कलात्मक अंकन में परितृप्ति मानता है। जीवन परिवर्तनशील है। इस परिवर्तन को ग्रहण करते चलना ही उपन्यास की प्रगतिशीलता है। कहा जा सकता है कि मानव की मूलभूत कामनाएँ – क्रोध, करुणा, प्रेम आदि देश-काल के बंधन से स्वतंत्र एक गति से अभिव्यक्त होती है। ठीक किंतु जिन परिस्थितियों में ये भावनाएँ प्रकट होती है वे परिस्थितियाँ परिवर्तनशील हैं। मानव स्वभाव के मूल में एकलयता होते हुए भी जिन वातावरणों में मानव पलता है उनमें पर्याप्त अनेकरूपता होती है। उपन्यास मानव स्वभाव पर परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के अंकन का प्रयास है। "जिज्ञासा और उत्सुकता मानव-स्वभाव की बड़ी तीव्र वृत्तियाँ है। इन्हीं वृत्तियों में कथा- कहानी का रहस्य निहित है।"[7]

"उपन्यास में कथावस्तु का महत्तव तो है पर इसके अलावा भी बहुत कुछ ऐसा जिसकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। कहानी में घटनाओं को कालानुक्रम में रखा जाता है जबकि कथावस्तु में भी घटनाओं का वर्णन ही रहता है पर यहाँ निमित्त और संयोग को ही रेखांकित किया जाता है। उपन्यास में घटनाओं और प्रसंगों का कालानुक्रम में सहज विधान ही नहीं रहता, इसके साथ-साथ घटनाओं और प्रसंगों के मूल कारणों और स्मृतियों को भी संयोजित किया जाता है।"[8] उपन्यास की कथावस्तु के संबंध में लाल कहते हैं कि "उपन्यास में जीवन–व्यापार अपने स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि मंच और काल की सीमाएँ वहाँ नहीं है। किंतु नाटक में थोड़े ही समय में द्रष्टव्य प्रदर्शन की सीमाओं के बीच जीवन-व्यापार दिखाना अभीष्ट होता है।"[9] लाल कहते हैं कि कौन-सी भी साहित्य कृति हो, चाहे उपन्यास हो, नाटक हो, कहानी हो उसमें होनेवाले कथानक सार्थक हो। आज भी कोई कृति जो कि आज के बौद्धिक प्रश्न और मानवीय संकट,

समस्या से नहीं जूझती, उन समस्याओं का साधन, समाधान नहीं खोजती वह रचना तो मूल्यांकन के योग्य नहीं मानी जा सकती। अतः उपन्यास में कथावस्तु का होना परम आवश्यक है। उसके बीना उपन्यास उपन्यास नहीं रहेगा।

कथावस्तु का अपना अलग महत्तव होता है। कथानक में विषय होता है, वह मात्र भावों और मनस्थितियों के संबोधन से नहीं बनता। कथानक विकास की साधना से निर्मित होता है। कथानक कहानी का सिर्फ ढाँचा नहीं है, वह लेखक के अनुभव में वस्तुगत वास्तविकता की अनिवार्य आँच और निशान का प्रमाण होता है। बिना सूक्ष्म भाषिक और तकनीकी योग्यता के भी सच्चे साहित्य की शर्ते पूरी कर सकता है। शिल्प, तकनीक और भाषा की योग्यता से प्रभाव को घनीभूत किया जा सकता है, असलियत नहीं पैदा की जा सकती। कथानक वास्तविकता का साक्षात्कार है, लेखक की सृष्टि नहीं। कथावस्तु की आवश्यकता संबंधी नित्यानंद तिवारीजी कहते हैं कि "कथावस्तु में कथानक कभी घटनाओं में नहीं होता वह जीवन की समस्याओं के विविध सहयोगी-विरोधी प्रसंगों के आनुपातिक संघठन में होता है।" इसप्रकार उपन्यास में कथावस्तु का अपना अलग महत्तव है।

2.4 'देवीना' उपन्यास की कथावस्तु

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का 'देवीना' उपन्यास कुल मिलकर एक सौ उन्नीस पृष्ठों में समाया हुआ है। देवीना उपन्यास प्रेम विषय को लेकर लिखा हुआ एक नारी प्रधान उपन्यास है। तेरह भागों में विकासित इस उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है।

कथावस्तु का आरंभ

इस उपन्यास का नायक 'देवकुमार' एम.बी.ए. तक पढ़ा हुआ एक संपन्न परिवार का नवयुवक है। फिर भी वह अपने अस्तित्व की खोज में अपना घर-दार, रिश्ते-नाते सब कुछ त्यागकर अपने घर से पलायन करता है। बिना किसी निश्चित मंजिल के वह यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। अपनी इस भटकंती में वह करीब दो-ढ़ाई साल बिता चुका है। ऐसे ही चलते-चलते वह अब मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश तक पहुँचता है और वही पर स्थित मांडू का किला देखने के लिए जाता है। वहाँ के निवासी लोगों से देवकुमार को मांडू के उसी किले का रहस्य मालूम पड़ता है। बाजबहादुर नामक एक मुसलमान सूबेदार ने अपनी प्रेमिका ब्राह्मण कन्या रूपमती के लिए यह मांडू का किला बनवाया था। उस किले का अपार सौंदर्य देवकुमार को मोहित करता है। और इसके साथ-साथ बाजबहादुर तथा रूपमती की अतीतकालीन प्रणय-कथा देवकुमार को अत्यंत प्रभावित करती है। देवकुमार शांततापूर्ण अंर्तमन

से उसी मांडू किले का सौंदर्य देखते रहता है तथा इसी सौंदर्य में उसी परिवेश में बाजबहादुर तथा रूपमती की अतीतकालीन प्रणय-कथा को अपनी वर्तमानकालीन दृष्टि से देखने लगता है। वही पर देवकुमार आधीरात में चाँद निकलते समय मांडू के किले में स्थित बाजबहादुर के महल में जाता है। और उसकी छत पर खडे होकर रूपमती के महल की तरफ देखने लगता है लेकिन उस वक्त देवकुमार आश्चर्यचकित होता है। क्योंकि उसे चांदनी रात में रूपमती जैसी ही एक लावण्यमती सुंदरी दिखाई देती है। लेकिन वह रूपमती नहीं है, वह है 'देवीना'। हमारे उपन्यास की नायिका। फिर सुबह दोनों देवकुमार और देवीना एक दूसरे को मिलते हैं। दोनों में परिचय होता है और परिचय प्रेम में परिवर्तीत होता है। उस समय प्रेमभाव से नायक देवकुमार देवीना से कहता है, "तुम्हारे बिना मैं अब नहीं रह सकता।"[11] अब दोनों एक-दूसरे के सिवाय एक पल के लिए भी बिछड़ना नहीं चाहते। देवकुमार देवीना के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। पर देवीना कहती है इस संबंध में पहले उसके बाबा की अनूमति लेनी चाहिए। फिर दोनों देवीना के बाबा के पास आ जाते हैं। देवीना के बाबा गाँव के बाहर प्रकृति के आँचल में एक झोपड़ी में रहते हैं। बाबा पहले देवकुमार को देवीना की जीवन कहानी बताते हैं कि देवीना एक लावारिस लड़की है। बाबा का वह बाजार जाते समय रास्ते के किनारे फेंकी हुई रोती बिलखती मिली थी। उसके माँ-बाप का पता है न जाँत-पाँत क्या? बस मानवता के नाते बाबा उसे अपने घर लेकर आते हैं और अपनी पत्नी से कहते हैं —"अरे सेठानी, कानपुर के बाजार में इसका प्रसाद मिल गया। देख... देख तो कैसे देख रही है जैसे बरखा की अंधेरी रात में जुगनू जगर-जगर करे।"[12] बनियाइन को पहले से ही एक 'कलुआ' नामक पुत्र था। फिर भी उसने इस लावारिस बच्ची को रखने की अनुमति दी और इतना ही नहीं तो अपने पुत्र कलुआ से ज्यादा वह उस लावारिस पुत्री 'देवीना' की देखभाल अच्छी तरह से करती थी। देवीना के जन्म, जाति को लेकर गाँव में तरह-तरह की अफवाएँ फैलती थी। पर बनीयाइन उनका मुँहतोड़ जवाब देती। गाँव में एक बार तुकुर-मुकुर होती है —"वह जो बुचिया है न, वह तो चमाइन की लड़की है।"[13] उसी गाँव में अचानक हैजा पड़ता है और उसमें बनीयाइन की मृत्यु हो जाती है। आगे बाबा बताते हैं कि फिर मैं अपना दुकान-घर सब कुछ कलुआ पर सौंपकर दूर इस कुटिया में रहता हूँ। यह देवीना बी.ए. तक पढ़ी लिखी है। बाबा ने अपने इस झोपड़ी के आस-पास अनेक पशु-पक्षी पाल रखे थे। जिनके साथ वे कभी-कभी इन्सान जैसी बाते करते हैं। देवीना की जीवन कहानी सुनने पर भी देवकुमार बाबा से कहता है, मैं जात-पात कुछ नहीं मानता मैं देवीना से शादी करना चाहता हूँ क्योंकि हम दोनों एक दूसरे पर नितांत प्रेम

करते हैं। तब बाबा उन्हें बताते हैं कि तुम्हारा प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है वह केवल कल्पना विलास है, कोरी भावुकता है। वह अतीत की कल्पना मात्र है।

बाबा फिर देवीना और देवकुमार को समझाते हैं कि, "तुम दोनों के देखने में एक पर्दा है, भावुकता का, रोमांस का। मांडू के किले के बाजबहादुर और रूपमती का।"[14] बाबा फ़िर अपनी पुत्री देवीना को समझाते हुए कहते हैं, "बेटी भूत यथार्थ नहीं है क्योंकि वह वर्तमान नहीं है। वह यथार्थ या अपने वर्तमान में, वर्तमान को वर्तमान में ही देखना होता है।"[15] फिर भी उसी रात जंगल की झोपड़ी में देवकुमार और देवीना का मिलन होता है। सुबह होते ही देवीना अपने बाबा से कहती है, "बाबा हमने विवाह का फैसला किया है, हमें आपका आशिष चाहिए।" इस बात पर बाबा उन्हें समझाते हैं तुम दोनों प्रेम के मूल तक जाओ। फिर बाबा देवीना और देवकुमार को एक तालाब के पास ले जाते हैं। वहाँ तालाब के गहरे जल में अपनी-अपनी परछाई देखने को तथा प्रेम की तथा विवाह करने की बात स्वीकारने को कहते हैं। फिर बाबा इन दोनों की परीक्षा लेने के लिए अलग-अलग देवकुमार को पश्चिम दिशा में तथा देवीना का पूरब दिशा में चले जाने को कहते हैं। और पूरे चार साल बाद इसी तालाब के पास आने को कहते हैं। और बाबा देवकुमार तथा देवीना को कहते हैं, "चार वर्ष बाद भी अगर तुम्हारा प्रेम जीवित रहाँ तो यहाँ वापस लौटकर मिलोगे वही मिलन विवाह होगा।"[16] फिर दोनो बाबा की वह बात स्वीकार करते हैं और बाबा के चरण छूकर आशीर्वाद लेकर अपनी-अपनी दिशा में निकल पड़ते हैं।

देवीना के बाबा से आशिर्वाद लेकर पश्चिम दिशा में चले जाते वक्त अब देवकुमार को अपने बीते हुए अतीत के पलों की याद आती है। वह बार-बार अपने तथआ अपनी प्राणप्रिया देवीना के साथ मांडू किले के परिवेश में बिताए हुए उन सहावने मदभरे पलों की याद सताती है। वह सोचता है कभी कबार उसने अपने प्रणय के आरंभिक दिनों में अपनी प्रेमिका देवीना से कहा था "मेरी प्राण-प्रिया, मुझे अपने रूप में बाँध ले ताकि हम दो अपरिचित अपने इस उन्माद और आनंद की नदिया में कहीं बह न जाँ। हे ईश्वर! जिस दिन आकाश के घोड़े पर जीन कसी गई, उसी दिन धर्म की पोथी में हम दोनों के नाम प्रेम के अक्षरों से लिख दिए गए। हे प्रभु! हमें नही, हमारे प्रेम को आशीष दे! हमें नहीं, हमारे इश्क को पनाह दे।"

जब 'देवकुमार' और 'देवीना' की पहली मुलाखात हुई थी तब दोनों ने बड़ी कोमलता से बड़ी नजाकत भरी मुस्कराहट से एक दूसरे को अपना परिचय पूछा था। जब देवीना अपने नाम के बारे में देवकुमार को कहती है मेरा नाम देवीना है

मतलब देवी ना अर्थात मैं देवी नहीं हूँ। तब उसी हसी मजाक शैली में देवकुमार देवीना से कहता है मेरा भी नाम देवकुमार है मतलब देव कुमार अर्थात मैं भी कोई देवता का कुमार नहीं हूँ। इसी तरह अब देवकुमार अपनी अतीत की गुजरी हुई बातों के बारे में सोचते-सोचते पश्चिम दिशा में चले जा रहा है। अतः यह उसके तथा देवीना की प्रेम की परीक्षा है। इन चार सालों में देवकुमार तथा देवीना को अपने अस्तित्व को साबित करते हुए अपने प्रेम को भी जीवित रखना है।

कथावस्तु का मध्य

अब देवकुमार सीधा अपने घर आगरा, दीवानजी की कोठी पहूँचता है। देवकुमार का बड़ा भाई ऐषआरामी तथा आमिरी के तेवर में जीनेवाला व्यक्ति है। वह देवकुमार और देवीना के संबंध को स्वीकार नहीं करता बल्कि देवकुमार को धमकाते हुए राजकुमार बड़े भाई के नाते उसे कहता है, "मेरे जीते जी तुम्हारा देवीना से विवाह नहीं हो सकता। तुम देवीना को भूल जाओ, उसी में तुम्हारा कल्याण है।" तब देव बड़ी गंभीरता से अपने भाई राजकुमार से कहता है, "कुल-जाति-धर्म से मेरा कोई संबंध नहीं। यह सब मेरे लिए अब बेमानी है।"[17] तब दोनों भाईयों में नाराजी पैदा होती है। ऐसे में ही राजकुमार के मामा कलकत्ता से आते हैं। तब राजकुमार उन्हें वह सारी हकीकत बता देता है। तब मामा बड़ी चालाखी से एक षडयंत्र रचते हैं। मामा उसे कहते हैं कि राजकुमार, "दे दो थोड़ी पूँजी, कहो कि प्रबंध खुद करे और अपना उद्योग दिखाए। जीवन संघर्ष में पड़कर सब चोंचले भूल जाएगा। सारा रोमांस भाप बनकर उड़ जाएगा।"[18] बिलकुल वैसा ही होता है और देवकुमार अपने खुद के उद्योग व्यवसाय में लग जाता है।

देवीना भी पूरब दिशा में चलते-चलते 'लहरतारा' गाँव में पहूँच जाती है। वह गाँव काफी विचित्र था। लहरतारा गाँव परंपरागत हिन-दीन तथा अंधकारमय जीवन जी रहा था। गाँव में पहुँचते ही देवीना वहाँ काली नामक युवती की गाँव के आवारा आदमियों के मारपीट से रक्षा करती है, और काली को तथा उसकी विधवा माँ को उनके टूटे-फूटे मकान तक पहुँचाती है। और वही पर उनके आँगन में देवीना रात बिताती है। एक दिन उसी गाँव का बी.ए. तक पढ़ा नौजवान 'रामदीन' अपना घर छोड़कर भाग रहा था। लेकिन 'देवीना' उसे रोकती है और रामदीन को समझाते हुए कहती है, "तुम पढ़े लिखे हो, तुम इसी गाँव को सुधारने का काम करो। इसतरह गाँव से पलायन करने से समस्या और गंभीर बनेगी।" तब रामदीन देवीना से कहता हैं -"इस गाँव में ऐसा कुछ नहीं है, सुधार करने लायक।"[19] फिर भी देवीना उसे समझाकर उसका मतपरिवर्तन करती है और उसे लेकर वापस लहरतारा

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

गाँव में ले आती है। इस लहरतारा गाँव की अपनी अलग कहानी है, गाँव में कोई खेती नहीं करता। कोई उद्योग व्यवसाय नहीं करता। गाँव का एक भी बच्चा स्कूल नहीं जाता। गाँव में सिर्फ चोरी, लूटमार होती है। गाँव के लोग चोरी का धंदा करने के लिए बंबई, कलकत्ता जैसे शहरों में जाते हैं। कुल मिलाकर सारा गाँव बदनाम है। ऐसे विचित्र गाँव को सुधारने की जिज्ञासा देवीना के मन मैं पैदा होती है। अब देवीना की सहायता के लिए इसी गाँव की एक नीडर युवती सामने आती है, वह युवती है 'भागवंती'। लेकिन नाम से भागवंती होनेवाली भागवंती विधवा का अभागा जीवन जी रही थी। भागवंती के साथ-साथ रामदीन, तकी पुनीत और शाहमुहम्मद जैसे नवजवान भी देवीना की सहायता के लिए तैयार हो जाते हैं। और अगले ही दिन देवीना रामदीन तथा भागवंती के साथ खेती में काम करना शुरु कर देती है। इस घटना से चिढ़कर रामदीन के पिता 'गादूर मिसिर' कहते हैं – "लोप हो गया धरम। ब्राह्मण का लड़का हल जोते। देवीना को अब गाँव में ही नहीं रहने देना।"[20] देवीनी फिर भी सबको समझाते हुए अपनी-अपनी खेती-बारी करने की तथा चोरी-चांडाली बंद करने की सलाह देती है।

देवकुमार ने भी अपने बल-बूतेपर रबर के टायर और ट्युब बनाने की खुद की बड़ी इंडस्ट्री बनाई है। तथा कई बार देश-विदेश की यात्राएँ की है। दिन-रात मेहनत करके अब वह बड़ा आदमी बन गया था। देवीना को अब उसी लहरतारा गाँव में एक पुत्र होता है, जिसका नाम है 'अनुराग'। देवीना अपने पुत्र अनुराग समेत भागवंती के घर में रहती है। लहरतारा गाँव से एक चोरों का दल शहर में चोरी, डकैती करने के लिए रवाना होता है। यह मालूम पड़ते ही देवीना रामदीन को साथ में लेकर, उनका पीछा करते-करते शहर तक जाती है। और बड़ी मेहनत से उनमें मत परिवर्तन कराती है तथा उनसे पूछती है – "क्या? इस चोरी की कमाई से तुम्हें सुख मिलता है?"[21] अब देवीना सबको सकुशल अपने लहरतारा गाँव लेकर जाती है।

फिर कुछ ही दिनों में गाँव में एक और घटना घटती है। गाँव की बेडिन औरतें (नाचनेवाली) अपने साथ बादररेखवा, गुलमेहंदी जैसे युवतियों को लेकर शहर में नाच-गाना करने तथा वैश्या व्यवसाय करने के लिए कलकत्ता रवाना होती है। यह बात जब देवीना को मालूम पड़ती है तब वह 'गादूर मिसिर' को अपने साथ लेकर कलकत्ता निकल पड़ती है और उन औरतों में भी मनपरिवर्तन करती है। देवीना उनसे कहती है, "अगर तुम लोग यह धंधा करोगी तो मैं भी यहाँ धंधा करूँगी।"[22] अब देवीना उन औरतों का आत्मविश्वास बढ़ाती है और उन्हें अपने साथ लहरतारा

गाँव में लेकर आती है। फिर गाँव के घर-घर की समस्या जानने के लिए देवीना अपने साथ रामदीन, शाहमुहम्मद, तकी तथा पुनीत को लेकर घर-घर में जाकर उनकी समस्या सुनती है तथा उसे सुलझाने का साधन भी जुटाती है। गाँव के मर्द लोग खेती करते हैं तथा औरतें चरखे पर सूत कातने का काम करती है। ऐसे ही एक दिन देवीना काली से पूछती है कि मुझे इस गाँव में आए कितने दिन हुए। तब काली बताती है कि, "मुझे क्या कभी भूलेगा? तुम उस दिन ना आई होती तो मैं क्या ज़िंदा बचती? तीन दिन और बीत जाएँ तो पूरे चार साल हो जाएँगे, हाँ।"[23]

अब जैसा की पहले तय हुआ था, पूरे चार साल बाद देवीना अपने पुत्र अनुराग के साथ अपने बाबा की कुटी पर पहुँच जाती है और इसके साथ हैं भागवंती, रामदीन और शाहमुहम्मद। फिर देवीना अपने बाबा से पूछती है क्या देवकुमार आए हैं? तब बाबा बताते हैं, "देवकुमार आए यह तुम्हारी इच्छा है। पर उसकी इच्छा उसीकी है।"[24] बेटी तुम तो आई लेकिन वह नहीं आया। अब और दो तीन दिन राह देखने पर तीसरे ही दिन देवीना पुत्र अनुराग तथा भागवंती, रामदीन और शाहमुहम्मद को साथ में लेकर देवकुमार से मिलने आगरा के लिए रवाना होती है।

'देवकुमार' के घर आगरा जाने पर पहले देवीना की मुलाकात देवकुमार के बड़े भाई राजकुमार से होती है। वह पहले से ही देवकुमार और देवीना के प्रेम का विरोधी था। वह देवीना तथा उसके पुत्र अनुराग को घर से भगाना चाहता है। और इतना ही नहीं तो देवीना को दस हजार रुपए देकर चुपचाप घर चले जाने को तथा देवकुमार को भूल जाने को कहता है। तब देवीना बड़े धैर्य से कहती है, "आप का दिमाग तो सही है? आप किससे क्या कह रहे है? आप जानते हैं मैं कौन हूँ - क्या हूँ?"[25] इस बात पर राजकुमार बहुत गुस्सा होते हैं और सबको चले जाने को कहते हैं। लेकिन राजकुमार की रखैल 'जोत्स्नाबाई' देवीना तथा उसके साथीयों को पनाह देती है। अगले दिन जब देवकुमार विदेश से आते हैं तब देवीना अपने पुत्र अनुराग को लेकर उसके सामने खड़ी हो जाती है। लेकिन देवकुमार उसे तथा पुत्र अनुराग को पहचानने तक इन्कार करता है। तब देवीना अपने अंगुली से अंगूठी निकालकर देव को दिखाती है। तब देवकुमार देवीना को सिर्फ पहचानता है लेकिन स्वीकारता नहीं। और देवीना का तिरस्कार करते हुए कहता है – "मैं वह नहीं रहा, इतना याद है, जिसके पास आप यहाँ आई...। क्षमा चाहता हूँ।"[26] अब देवीना की आँखो के सामने वह मांडू का किला घूमने लगा। कौन था वह बाजबहादुर? कौन थी वह रूपमती? कौन था वह देवकुमार? कौन थी वह देवीना? क्या, स्थूल यथार्थ भी स्वप्न होता है?

देवीना और देवकुमार जब चार साल के लिए अपनी-अपनी अलग दिशा में निकल पडतें हैं तब बाबा हर दिन अपनी अनुभूति की दिव्य दृष्टि से उस शांत गहरे तालाब के जल में देवीना तथा देवकुमार के जीवन में घटित प्रसंग को देखते हैं। अब देवकुमार के चरित्र में आए परिवर्तन को बाबा देख रहे हैं महसूस कर रहे हैं उसके (देवकुमार के) बड़े भाई राजकुमार ने जिस क्रोध और क्षोम से उसका स्वागत किया उसपर इसमें अब कोई प्रतिक्रिया न हुई। उसने जैसे अब क्रिया और प्रतिक्रिया के भेद को पा लिया है। प्रतिक्रिया के मूल में भय है। क्रिया के मूल में है आत्मविश्वास। प्रतिक्रिया किसी अन्य के कारण होती है। उसका कर्ता वह नहीं होता, केवल भोक्ता होता है। क्रिया का कर्ता ही वह होता है। यह अनुभव देवीना के मिलन ने दिया है। बाबा के साथ उस भेंट से उसे मिला। उस दिन से वह खूद अपने घर का, घर के परिवेश का, अपने बड़े भाई का दर्शक बन गया। अतः देवकुमार बड़ा अमीर आदमी बन जाता है। लेकिन इस अमीरी में वह अपनी प्रेमिका देवीना को भूल जाता है। और अंतरिम निर्णय की घडी में वह देवीना का साथ नहीं देता। देवीना भी इन चार सालों में अपनी अलग सी पहचान बनाती है। वह अपने विकास के साथ-साथ अपने संपर्क में आए आदमियों का भी विकास करती है तथा उन्हें सही मायने में जीवन जीने का ढंग सिखाती है। लेकिन सारी दुनिया को मानवता का पाठ पढ़ाने वाली देवीना अपने प्रेमी देवकुमार को मानवता का पाठ नहीं पढ़ा सकती। फलतः अंत में अपने प्रेमी देवकुमार से तिरस्कृत की जाती है। तब उसका अपने प्रेम के प्रति घमंड चकनाचूर हो जाता है।

कथावस्तु का अंत

देवीना अब पुत्र अनुराग तथा भागवंती, रामदीन और शाहमुहम्मद के समेत सीधे लहरतारा गाँव वापस लौट जाती है। अब देवीना अपने अतीत को भूलकर मतलब अपने प्रेमी, पति (देवकुमार) को भूलकर अपना नया जीवन आरंभ करती है और इसी लहरतारा गाँव में अपनी कर्मभूमि बनाने की ठानती है। इस संबंध में देवीना सोचती है, "दुख को हम अपने पिछले दुखों में मिला देते हैं। पिछला दुख इसीलिए वर्तमान रहता है कि हम उसका संग्रह करते चलते हैं। हम उसे देखकर भोगकर उससे मुक्त नहीं होते। हम दुख पालते हैं और उसीके साथ जीने लगते हैं।"[27] इस बीच लहरतारा गाँव में एक घटना घटती है। भंवरा नामक एक नौजवान उस गाँव में दाखिल होता है, उसका पहनावा बिलकुल शहरीबाबू सा है। सारे गाँव वाले उसे भंवरा चोर नाम से जानते हैं। वह देवीना के सामने आते ही सीधे उनके पैर छूता है और देवीना को अपनी बहन मानता है। भंवरा वास्तव में एक अच्छा आदमी है लेकिन परिस्थिति का मारा है। देवीना उसमें भी उचित परिवर्तन कराके उसे जीवन

का सही रास्ता दिखाती है। अब भंवरा देवीना के चरणों पर साढ़े सात हजार रुपए रखकर कहता है कि इस रुपयों से गाँव के लिए एक स्कूल बनवाया जाए। इतना ही नहीं तो भंवरा स्कूल के लिए अपनी दो बीघा जमीन भी देने के लिए तैयार होता है। देवीना अब गाँववालों से मिल-जुलकर लहरतारा गाँव में बच्चों के लिए स्कूल बनवाती है। और उसी स्कूल में देवीना अध्यापिका बन जाती है।

अचानक एक दिन देवकुमार आलिशान गाडी लेकर लहरतारा गाँव में आता है, तथा देवीना और पुत्र अनुराग को अपने साथ ले जाना चाहता है। लेकिन अब देवीना उसके साथ जाने के लिए प्रस्तुत नहीं है। तब देवकुमार कहता है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें लेने आया हूँ। तब देवीना कहती है, "वह जिसे हमने प्रेम माना वह प्रेम नहीं था, आत्मरति थी.... अपने आपको भूलकर बाजबहादुर और रूपमती बन जाना, वह हमारी बुनियादी भूल थी।"[28] देवकुमार देवीना से बार-बार बिनती करता है, क्षमा याचना करता है, पर देवीना अपने निर्णय पर अडीग है।

देवकुमार अब सीधा मंगलबाबा के पास चला जाता है। बाबा से अपने अपराध की क्षमा माँगता है। बाबा के चरणों में गिड़-गिड़ाकर रोता है। तब बाबा देवकुमार को समझाते हैं, "तुलना मन करता है, मन का काम ही वर्तमान से भागकर जो नहीं है, वहाँ जाना है। जाना सदा अतीत में है। अतीत कुछ नहीं है वह भी मनबुद्धि की रचना है... खेल है... भ्रम है।"[29] अब देवकुमार बाबा का आशीर्वाद लेकर सीधा लहरतारा गाँव में चला आता है। अपने पुत्र अनुराग को गोद में उठाकर चूमता है और अंत में देवकुमार इसी लहरतारा गाँव में देवीना तथा पुत्र अनुराग के साथ रहने का निश्चय करता है। इसतरह देवीना उपन्यास में परंपरागत पुरुषी अहंकार को नारी स्वाभिमान के सामने झुकाया है।

अपने प्रेमी देवकुमार से अपमानित होने पर वह स्वयं की एक अलग कर्मभूमि बनाने की बात सोचती है। तथा इस सदमें से अपने आप से बातें कर रही है। तभी तो अक्सर कार्य-व्यवहार कर्म नहीं हो पाता, केवल प्रतिक्रिया होकर रह जाती है। उसे जो मिलता है, उसे प्राप्त नहीं कर पाता। जो मिलता है नहीं, उसके पीछे नादान बच्चे की तरह दौड़ता है। उस दौड में उसे जब चोट लगती है, तब वह दोष देता है बाहर को। अपने आप को कभी दोषी नहीं देखता। क्यों कोई अपने-आप को दोषी देखे? ठीक भी है, क्यों कोई अपने-आपको छोटा माने? पर सच्चाई तो सच्चाई है। वह जो है, वही है। पर इसे क्यो न माने? यह कहकर देवीना खिलखिलाकर हँस पड़ी थी। जैसे ...-कार्तिक की वर्षा हो गई हो। लेहरतारा गाँव के खंडहरों, छान-छप्परों पर लौकी रामतौरई के फूल खिल गए हो। सूने दरवाजे

पर कोई चैती झमार गाने लगा हो। झूठे, कामचोर, उदास मुखों पर किसीने रंग-अबीर मल दी हो। 'अब देवीना को इस मनुष्य जाती तथा प्रकृति के तरफ देखने की नई दृष्टि प्राप्त होती है। अतः इस नवदृष्टि के परिपेक्ष्य में ही वह अपना जीवन यापन नए सिरे से आरंभ करती है।

देवीना जिस लहरतारा नामक गाँव अपनी कर्मभूमि बनाती है उस गाँव का सर्वांगिण विकास करती है। और उस लहरतारा गाँव को एक आदर्श गाँव के रूप में प्रस्थापित करती है। फिर कई दिनों बाद जब उसका प्रेमी देवकुमार उसे अपने साथ लेने आता है तब देवीना उसके इस प्रस्ताव को अस्विकार करती है। फिर देवकुमार देवीना के बाबा के पास जाता है और उनके माँफि माँगकर तथा अज्ञा लेकर पुनः वापस देवीना के पास चला आता है और अपनी प्रेमिका (पत्नी) देवीना तथा पुत्र अनुराग के साथ वही लहरतारा गाँव में रहने लगता है।

निष्कर्ष

डॉ. लाल का 'देवीना' उपन्यास भले ही आधुनिक रचना हो, लेकिन उसकी सृजन की पृष्ठभूमि पुराण-कथा दुष्यंत-शकुंतला की प्रणय कथा है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु में परंपरागत प्रेम चित्रण को आधुनिकता के साथ अंकित किया है। और हमारे सामने अतीत और वर्तमान के बीच के अंतर को प्रस्तुत किया है। लाल इस उपन्यास की कथावस्तु के माध्यम से हमें बतलाते हैं कि अतीत अतीत होता है और वर्तमान वर्तमान होता है। अतः हमें वर्तमान कालीन परिवेश का वास्तविकता का भलिभाँति ज्ञान होना परम आवश्यक बात है। प्रस्तुत उपन्यास में लाल जी ने नारी को प्रधानता दी है। वह अब पुराणकाल की प्रेमीका (शकुंतला) नहीं रही जो पति (दुष्यंत) के चरणों में गिड़-गिड़ाती है बल्कि अब वह आधुनिक काल की प्रेमिका (देवीना) है जो पति (देवकुमार) के चरणों में गिड़-गिड़ाने के बजाए अपनी खुद की कर्मभूमि बनाती है।

* * *

संदर्भ सूची

अ. क्र		पृ.
1.	शिवनारायण श्रीवास्तव - हिंदी उपन्यास	3
2.	शिवनारायण श्रीवास्तव - हिंदी उपन्यास	2
3.	डॉ. रामकुमार गुप्त - हिंदी नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर	208
4.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	भूमिका - 7
5.	डॉ. रघुवंश - कृतिकार लक्ष्मीनारायण लाल	30
6.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - वसंत की प्रतीक्षा	64
7.	शिवनारायण श्रीवास्तव - हिंदी उपन्यास	51
8.	डॉ. ऋता बाबा - उपन्यास के सिद्धांतों का विकास और विवेचन	64
9.	डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र - नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल	163
10.	नित्यानंद तिवारी - आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध	117
11.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	26
12.	वही	30
13.	वही	31
14.	वही	39
15.	वही	41
16.	वही	46
17.	वही	50
18.	वही	55
19.	वही	60
20.	वही	63
21.	वही	67
22.	वही	70
23.	वही	75
24.	वही	77
25.	वही	81
26.	वही	85
27.	वही	87
28.	वही	105
29.	वही	116

* * *